वसुन्धरा सेवा समिति

तहसील - कल्याणपुर, जिला बलोतरा, राजस्थान – 344026

GROW+ Project

"बबरलई नाड़ी - जंगल से जीवन तक का सफर"

बबरलई नाड़ी आज केवल एक सार्वजनिक तालाब नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के लोगों, पशुओं और पक्षियों के जीवन का आधार बन चुकी है। यह नाड़ी सिर्फ पानी का स्रोत नहीं है, बल्कि उस संघर्ष, सामुदायिक सहयोग और परंपरा की कहानी है जिसने एक बंजर और वीरान भूमि को जीवन देने का कार्य किया। आज भी जब गांव के लोग इस नाड़ी के किनारे बैठते हैं, तो वे केवल पानी नहीं देखते, बल्कि अपने पूर्वजों की मेहनत, संघर्ष और सामूहिक प्रयासों को महसूस करते हैं। बबरलई नाड़ी के पास स्थित गंगावास क्षेत्र के निवासी थनाराम जी और गांव की महिलाओं ने बताया कि कई वर्ष पहले यह पूरा इलाका घने जंगल और बंजर भूमि के रूप में जाना जाता था। उस समय यहाँ कोई स्थायी निवास नहीं था। चारों ओर जंगली झाड़ियाँ, वीरानी और जंगली जानवरों का भय हुआ करता था। लोग इस क्षेत्र में बसने से डरते थे। यह पूरा क्षेत्र उस समय कोरनावटी रजवाड़ी शासन के अधीन आता था। ग्रामीणों के अनुसार कोरनावटी के ठाकुर साहब ने सबसे पहले दूदोबेरा गांव से कुछ परिवारों को इस क्षेत्र में लाकर बसाया। उस समय चारों ओर घना जंगल और बंजर भूमि फैली हुई थी। धीरे-धीरे जंगलों की सफाई करवाई गई, जमीन को खेती योग्य बनाया गया और लोगों ने यहां कृषि कार्य शुरू किया। समय बीतने के साथ यहां छोटी-छोटी बस्तियाँ बसने लगीं और लोगों के मन में बेहतर जीवन की उम्मीद भी जागने लगी। लेकिन इन सभी प्रयासों के बीच एक समस्या ऐसी थी, जो हर दिन लोगों के सामने खड़ी रहती थी – पानी की समस्या। खेती तो शुरू हो गई थी, लेकिन पीने के पानी का कोई स्थायी स्रोत नहीं था। महिलाओं को कई किलोमीटर दूर दराज की ढाणीयों में जाकर पानी लाना पड़ता था और गर्मियों के दिनों में स्थिति और भी कठिन हो जाती थी। कई बार पूरा दिन केवल पानी की व्यवस्था करने में ही निकल जाता था। इन्हीं कठिन परिस्थितियों ने लोगों को एक साथ मिलकर समाधान खोजने के लिए प्रेरित किया। धीरे-धीरे समुदाय द्वारा एक छोटी सी नाड़ी की खुदाई शुरू की गई। शुरुआत में यह केवल वर्षा जल को रोकने का एक छोटा प्रयास था, लेकिन लोगों की मेहनत, सामुदायिक सहयोग और वर्षों तक लगातार की गई देखभाल ने इस छोटी नाड़ी को आज एक बड़े सार्वजनिक तालाब का रूप दे दिया। जैसे-जैसे आबादी बढ़ती गई, वैसे-वैसे लोगों ने परंपरा के अनुसार हर वर्ष इसकी सफाई और खुदाई का कार्य जारी रखा, ताकि पानी लंबे समय तक सुरक्षित रह सके। यही कारण है कि समय के साथ यह नाड़ी पूरे क्षेत्र के लिए एक स्थायी पेयजल स्रोत बन गई और आज भी हजारों लोगों तथा पशुओं की जीवनरेखा बनी हुई है। थनाराम जी बताते हैं कि सामान्यतः इस नाड़ी में वर्ष के 9 से 10 महीनों तक पानी उपलब्ध रहता है। जब तक पानी बना रहता है, तब तक लगभग 400 घरों की आबादी इसी पानी पर निर्भर रहती है। केवल ग्रामीन निवासी ही नहीं, बल्कि लगभग 2000 भैंसें और 10,000 से 12,000 तक भेड़-बकरियाँ भी इसी नाड़ी के पानी से अपनी प्यास बुझाती हैं। इस क्षेत्र में पशुपालन लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है, इसलिए इस नाड़ी का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

लेकिन अब परिस्थितियाँ पहले जैसी नहीं रहीं।

थनाराम जी ने चिंता व्यक्त करते हुए बताया कि पहले भी कई बार लंबे समय तक बारिश नहीं होती थी, तब भी धीरे-धीरे नाड़ी का पानी कम हो जाता था। लेकिन अब जलवायु परिवर्तन के कारण स्थिति और गंभीर हो

गई है। अनियमित वर्षा, अत्यधिक गर्मी और लगातार बढ़ते तापमान के कारण नाड़ी का पानी पहले की तुलना में बहुत जल्दी सूखने लगा है। उन्होंने बताया कि आज स्थिति ऐसी हो गई है कि यदि कुछ दिनों तक बारिश नहीं होती, तो नाड़ी में बचा हुआ पानी भी पूरी तरह सूख जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि इस पानी की कमी का असर केवल इंसानों तक सीमित नहीं है। गांव के पशु और पक्षी भी सूखे की मार झेल रहे हैं। गर्मियों के दिनों में पशुओं को पानी के लिए दूर-दूर तक भटकना पड़ता है। कई बार पक्षी भी पानी की तलाश में इधर-उधर भटकते दिखाई देते हैं। गांव के लोगों के लिए यह दृश्य बेहद चिंताजनक और भावनात्मक होता है, क्योंकि यह नाड़ी केवल जल स्रोत नहीं बल्कि पूरे प्राकृतिक जीवन चक्र का हिस्सा बन चुकी है। थनाराम जी ने एक और महत्वपूर्ण बात साझा करते हुए बताया कि पहले नाड़ी के पास स्थित खेतों से वर्षा का पानी स्वाभाविक रूप से बहकर इस नाड़ी तक पहुंचता था। खेतों और नाड़ी के बीच पानी का आवागमन लगातार बना रहता था, जिससे नाड़ी में लम्बे समय तक पानी सुरक्षित रह पाता था। लेकिन अब धीरे-धीरे वह प्राकृतिक रास्ता बंद हो गया है। क्युकि रास्ते में पक्का सड़क बन जाने के कारण उसके निचे जो छोटा सा रास्ता था वो भी बंद होने के कारण वर्षा का पानी पहले की तरह नाड़ी तक नहीं पहुंच पाता और इससे नाड़ी में पानी की मात्रा लगातार कम होती जा रही है। ग्रामीणों ने बताया कि बदलते जलवायु और कम होती वर्षा के बावजूद यह नाड़ी आज भी लोगों के लिए सबसे बड़ा सहारा बनी हुई है। हालांकि पहले बारिश अधिक नियमित होती थी, लेकिन अब मौसम का पैटर्न तेजी से बदल रहा है। कई बार बारिश देर से होती है और कभी अचानक अत्यधिक वर्षा हो जाती है। इसके बावजूद समुदाय ने इस नाड़ी को बचाए रखने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। नाड़ी के संरक्षण और पुनर्निर्माण के लिए हर वर्ष महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के तहत सफाई और खुदाई का कार्य कराया जाता है, ताकि पानी की उपलब्धता बनी रहे। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोग भी सामुदायिक सहयोग के माध्यम से चंदा इकट्ठा करके नाड़ी की सफाई करवाते हैं। ग्रामीण महिलाओं ने बताया कि वर्ष 2018 में समुदाय के सहयोग से JCB मशीन द्वारा नाड़ी की गहरी खुदाई करवाई गई थी। इस कार्य के बाद नाड़ी की जल संग्रहण क्षमता बढ़ गई और अब इसमें पहले की तुलना में अधिक समय तक पानी उपलब्ध रहता है। कई बार तो पूरे वर्ष पानी बना रहता है, जिससे लोगों और पशुओं दोनों को बड़ी राहत मिलती है। यह कहानी केवल एक तालाब की नहीं है, बल्कि उस सामुदायिक सोच की कहानी है जहाँ लोग जल संरक्षण को अपनी जिम्मेदारी मानते हैं। बबरलई नाड़ी आज इस बात का उदाहरण है कि यदि समुदाय, परंपराएँ और स्थानीय प्रयास मिलकर कार्य करें, तो बदलते जलवायु संकट के बीच भी जल स्रोतों को जीवित रखा जा सकता है।